





आभा मरुवधि

1.030

ASIA ARCHIVES

दुःखे प्रतिष्ठा धेमाङ्ग प्रजा
 दानावा - हे शिवाय पादकां वी
 अतः वा - मंदुतास्त्रिय
 वनादे - अंजां प्रह्लादीना
 खगल - दुर्भोगादसि
 एषो भोः को मोक्षदोषी

खपोदेशः अगतपत्तनगर ॥ मोदेशः कांतिपुर ॥ मलाः ललिउपधगा ॥ गोलः वितदितु वेदि का
 धेमि प्रध्वपानगर ॥ साको शंखपुर ॥ सागाः जेहि हपुर नगर ॥ पदानी प्रयावति ॥



आशा नमस्करि
 1.030
 ASHA ARCHIVES

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ जजमानस्य पूष्यभाजनं कारयन् ॥ अद्यादि वाक्य ॥ जजमानस्य
गृहे प्रतिष्ठा कलशः वल्यार्चण पूजा निर्मित्यार्थं पूष्यभाजनं समर्पयामि नमः ॥ ॥
श्रीसप्तर्षीत्यादि ॥ वं ह्यारणी कमलेन्दु त्यादि ॥ पीठमध्यनिवासित्यादि ॥ ॥ वं ह्यः
न्यादि जयादिभिः परिहृता क्षत्रे द्वितामसिका ॥ श्रीवीरेश्वर कुलेश्वरी समारसा श्रू
लाक्ष्मालाधृता ॥ उमत्याश्च ससांकमण्ड लधरी पियूषधारवा ॥ वर्मोणवा काञ्चविं
दुसहितंचक्रे श्री पातुवः ॥ रक्तवर्णा चतूर्वीक्ष अक्षमालात्रिशूलकं कपालं विद्महे

हस्ताच चक्रे श्री नमोस्तुते ॥ पूर्वदक्षिणार्धश्रीमोनेताग्रतः पूर्वादि वा मासिका ॥ क्षत्रे
सोवटभूषदूर्गानिलयं हेमनाथाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमो देवविभुजसोकादि
दोषघ्न ॥ नित्यानन्दमायि प्रमोखसुखदा वल्यार्चण पूजा विभीः ॥ ॥ सिद्धि
लूकयार्भेत्यादि ॥ यथावा प्रहात्यादि ॥ आचार्य्यायकमण्ड ल पूष्यभाजनं सम
र्पयामिः ॥ ॥ ३ आचम्य ॥ अद्यादि स्नानादि चेतमिंधूर श्रीसूर्यार्घ्यः ॥ ॥
गुरुनमस्कारन्यासः ॥ मन्त्रहो अस्मान्महत् ॥ ॐ नमो कनिष्काय येवंकर यदंग

न्यासादः ॥ ॥ जलपात्र-अर्घ्यपात्र-पूजा-भूतशुद्धि-आवाहन ॥ ॥ आवाहन २
मालनी पठेत् ॥ ॥ पंचवलि ॥ मयुरास्नाय पादुकां ॥ श्रीं श्रीं कुलपुत्रवदकं
नाथाय पादुकां ॥ धनवली ॥ नरास्नाय पादुकां ॥ प्रोत्तमदीप-धर्मोदेवी महाका
लाय क्षत्रपालाय पादुकां ॥ वली ॥ ॥ त्रिकेशितयोगिनीणां पीठजा-क्षत्रजा-
महजा योगजा-मंदोहजा जेके श्रित-जोगिनिणां क्षेत्री-भूचरी-दिग्गरी-एका
शरी-दाशरी-त्रिशरी-चतुर्ध्याञ्जनवाशरीनां-यथोपयं-नानावलिं गुरु २ स्वाहा-म

मासिदिकुर्वन्तु-३ फलस्वाहा-वालि ॥ ॥ पेटास्नाय पादुकां ॥ ह्रिये श्रीसिद्धिनाथ
पुष्पादेवी पादुकां ॥ वली ॥ ॥ मुसास्नाय पादुकां ॥ गांगी गंगः श्रीकुलगणेश
नाथ पादुकां ॥ वली ॥ ॥ भावास्नाय ॥ दन्दतर्जनी-विन्दु-गज-मुद्रादर्शयत् ॥
जाय ॥ श्रीं स्वाहा-प्रोत्तमदीप-जोत्तमदीप-होमं धर्मोदेवी-गोस्वाहा ॥ ॥ स्तोत्र-गौर्य
पूत्रं त्यादि ॥ ॥ त्रिदेवपूजा ॥ श्रीसम्पत्तानावाहन ॥ ह्रीं अनन्तमण्डलश्रीआ
दिदेव पादुकां ॥ ह्रीं ह्रीं पादुकां ॥ वलि ॥ ॥ नरास्नाय पादुकां ॥ प्रोत्तमदीप-
धर्मोदेवी श्रीमहाका ॥ ॥ तक्षत्रपालाय पादुकां ॥ वलि ॥ ॥ श्रीं श्रीं कुलपुत्रवद
कनाथाय पादुकां ॥ वली ॥ ॥ गांगी गंगः श्रीकुलगणेशनाथ पादुकां ॥ वलि

आवाहनादी तर्जनी दण्ड आज्ञा मुद्रादर्शयत ॥ ॥ ततो कलसार्चण ॥ मृत्युंजय न्याम
आवाहनादी ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ शुद्ध स्फोटिक संकाशं त्रिनेत्रं त्रन्द्रमौलिकं ॥ वादा
भयहर्ति च मुद्रामालाधारं ॥ एवं ध्यात्वा महादेवं इष्टकामार्थसिद्धयः ॥ ध्यान पूष्य नमः ३
अथो वज्र त्राया जली ॥ ॐ जूं सः मृत्युञ्जयाय अमृतीश्वर्यमाहा भो वाय अमृत लक्ष्मी
शक्तिशक्तिताय ॐ जूं सः पादुका ॥ ॥ पूजन ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ वेङ्कटेश्वर नमः ॥ ॐ
हृदाय ॥ ॐ इन्द्राय ॥ ॐ सदाशिवाय ॥ ॐ मृत्युंजयाय ॥ ॐ अमृतेश्वराय ॥ ॐ प
श्याय ॥ ॐ मासाय ॥ ॐ समस्तत्राय ॥ ॐ इन्द्राय ॥ ॐ इन्द्रादि १० लोकपालेभ्यो नमः
ॐ क्षाण्दि सप्तसमुद्रेभ्यः ॥ ॐ आश्विन्यादि नक्षत्रेभ्यः ॥ ॐ वेङ्कटेश्वरादि योगेभ्यः ॥ ॥

ॐ मेषादि राशिभ्यो ॥ ॐ मूर्हतेभ्यो ॥ ॐ गंगादि तीर्थेभ्यो ॥ ॐ अक्षरांजीवेभ्यो ॥ ॐ वा
सादि ऋषीभ्यो ॥ अनन्तादि अष्टकूलीक नो गेभ्यो ॥ शान्ति विद्या कला निवृत्ति प्रातिष्ठ
त्रियां जली ॥ हं कुलवृक्ष महासेन स मोहनी सकल तीर्थ मंत्र देवता कलौत्वाधीयमेव ह
विष्णु रूपात्मने आत्मविद्या शिव तत्वाय हं हं श्रीसंपूर्ण कलश मूर्ते पादुकां ३ ॥ धनवतो
आवाहनादि धेनु मुद्रा ॥ जाप ॥ स्तोत्र ॥ ॐ ह्रीं श्री सकल तीर्थ जलेन पूर्णो ॥ स्विष्टः
त्रपश्चैव मुक्तो भित्तपूष्यमाला ॥ यज्ञेषु याज्ञे विद्यय मुनीभिः प्रसृष्टा कुम्भ मूर्ति शिवशः
क्तियुतं नमामि ॥ ॥ क्रुष्का मिद्ध मूस ॥ श्रीचैनमः लक्ष्मी नमः ॥ अन्नगंधादी ॥ ॥
थते कलश पूजा ॥ ॥ गोलजा पूजा ॥ मूषास्त्राय पादुकां ॥ गौं गौं गौं गौं श्रीकुल

गोरोत्तमय पादुकां ॥ मङ्गल ॥ वलि आवाहनादि ॥ गजमूद्रा ॥ जाय-लोत्र ॥ भुमने शया ॥
गोगासपूजा ॥ ॥ नन्दाय नमः ॥ भुमदाय ॥ मूर्त्ति ॥ भुमीनाय ॥ भुमनो हराय ॥ ४
तेन वली ॥ आवाहनादि धूप दीप जाय-लोत्र ॥ नन्दभुमदा मूर्त्तिः सुशीली भुमनो हरा
पवित्रं पापनाशाय पञ्चगोमात्रेके नमः ॥ ॥ अथ कोमलिपूजा ॥ ॥ आधा शक्ती
त्वादि ॥ मयूराम्नाय पादुकां ॥ ध्यानं ॥ मयूराम्नसमाहूता वात्सर्क कोटि भामिका ॥
चतुर्भुजा श्यामाला च वामेशक्ति धारावरा ॥ वामे कयालं च सर्वालं का भूषिता ॥
नवगं मूजमन्दे वा खण्डे नु नमसंयुतं ॥ देवी कूटे नवर्त्तेन पूर्ववत्सर्व कायेन ॥ ॥
शनि ध्यान पूजा नमः ॥ त्रियाजली ॥ ऐं ह्रं त्रं जूं त्रं कौं कौं कूं कर्मलं वं मूं कौं श्री कोमलि कवि

चेपादुकां ॥ ३ ॥ बाले ॥ गायत्री ॥ ॥ ॐ कुलकुमारे विप्रदे मन्त्रकोटि श्वरी क्षी महीतयोः कोमरी प्रचो
दयान् ॥ बाले ॥ आवाहनादी ॥ मुद्रा धूप दीप जाप ॥ स्तोत्र ॥ बाल भावेत्यादी ॥ ॥ नीति
म ॥ गुह्यनमस्कार ॥ न्यास ॥ जल पात्र अर्घ्य पात्र पूजा भूतश्चरि आत्म पूजा ॥ श्रीसम्वर्ता आ
वाहन ॥ त्रिदेव ॥ नरास्त्राय पादुकां ॥ मयुरास्त्राय पादुकां ॥ मुषास्त्राय पादुकां ॥ चतुर्नव
ली ॥ श्रीं श्रीं कुलपुत्र वंदु कनाथाय पादुकां ॥ पूं ह्रीं क्षीं महाकाल शंभुपालाय पादुकां ॥ वली
गां गीं गूं ग्लो श्री कुलगणेश्वराय पादुकां ॥ वली ॥ आवाहनादी ॥ तर्जनी दन्त गज मुद्रां दर्श
येत ॥ ॥ अथ चालास पूजा ॥ श्रीसम्वर्ता ॥ त्रिदेव ॥ आधा शक्तित्यादी ॥ नरास्त्राय पा
दुकां ॥ ध्या ॥ प्रेतामनास्त्रितं देवं नीलवर्णैकवक्त्रकं ॥ त्रिनेत्रं धनुजं देवं खड्गपेतकधारकं ॥

समस्त लोका हस्त च विदुः कापालधारणं ॥ मूढ हाहादिभूसांगं ध्यातव्यं नृपालकं ॥
 इति ध्यानपुष्पनमः ॥ ॥ त्रिपाजलो ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वहाणो नमः ॥ २ मोहेश्वरि ॥ २ को
 मारि ॥ २ वेभवी ॥ २ वीराही ॥ २ इद्रानो ॥ २ चामुण्डायै ॥ २ महालक्ष्मी ॥ २ बलि ॥
 ॐ ह्रीं ओसिताङ्ग भैरवाय पादुकां ॥ २ ह्रीं भैरवाय ॥ २ चण्ड भैरवाय ॥ २ क्रोध भैर
 वाय ॥ २ उग्र भैरवाय ॥ २ कपालोत्त भैरवाय ॥ २ भीषण भैरवाय ॥ २ संहार भैरवाय
 ॐ ह्रीं हेतुक भैरवाय पादुकां ॥ २ अम्बो वैताल भैरवाय ॥ २ निपुणतक भैरवाय ॥ २ अग्नी
 जिह्वा भैरवाय ॥ २ कोलास भैरवाय ॥ २ कलालीन भैरवाय ॥ २ ऐकपाद भैरवाय ॥
 श्रीमहर्ष भैरवाय ॥ हानक भैरवाय ॥ २ अकार भैरवाय ॥ ॥ त्रिपाजलो ॥ ॥ ह्रीं वहाणो नमः ॥

साननेत्रपालाय पादुकां ३ बाली ॥ अदंग ॥ त्वाक महामली आवाहनादि ॥ तर्जाने येनि मुद्रादर्श
 श्रुते थालाय पुजा ॥ क्षत्रपाल ॥ ॥ ततो कलंक बाले पुजा ॥ श्रीमन्वर्ता ॥ त्रोटो देव ॥ आधारश
 कित्यादि ॥ अक्षरूपिका सनाय ॥ ध्यान ॥ काकारनाकारकृतात्रिनेत्रासवासनसिद्धि
 शि शिवाभी ॥ कापालकर्तिकालधारण ॥ संरुद्धा त्रिशूलजटाधरा ॥ देवावरसुगु
 चगनया ॥ मालिक ॥ मालोद्य भयात्रिनेत्रा ॥ नाना मणी मण्डप भूयितामा ॥ इधु सदावादि
 कराविरात ॥ इति ध्यानपुष्पनमः ॥ ॥ ह्रीं ॥ ह्रीं ॥ ह्रीं ॥ सिद्धि मातंगेश्वराय पादुकां ॥ बलि ॥ ॥ सं
 ह्रीं ॥ सिद्धि मातङ्गेश्वरी देवी ॥ बलि ॥ ॥ चतुर्भुज पुजा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ पादुकां ॥ बलि ॥ भीष
 माय पादुका ॥ बली ॥ रोद्राय पादुकां ॥ बलि ॥ कालाय ॥ बलि ॥ ॥ अक्षरूपे पुजा ॥ ग

जमातगीश्वरीदेवी३॥बली॥रामातंगीश्वरीदेवी३॥बलि॥वनमातंगीश्वरीदेवी३॥बलि
घोरमातंगीश्वरीदेवी॥बलि॥चाण्डमातंगीश्वरीदेवी३॥बली॥वीरमातंगीश्वरीदेवी३॥ब ६
ली॥जयमातंगीश्वरीदेवी३॥बलि॥गच्छिखरमातंगीदेवी३॥बलि॥ ॥त्रिविष्ट॥भूतभ्यो
बली॥प्रेतेभ्यो बलि॥पिशाचेभ्यो बलि॥शंभुभ्यो बलि॥द्वारपूजा॥शिवायनमःबली
स्वानासनमः बलि॥गुरुभ्यो नमः बलि॥उल्कायनमः॥बलि॥ ॥ब्रह्माद्यादि॥ ॥
ॐ क्लीं वल्लभो३॥२महिश्वरी॥२कोमारी३॥बलि॥२वेमवी३बली॥२वाताही३बलि॥
इन्द्रायनो३॥बलि॥२चामुण्डा३बलि॥२माहात्म्यी३बलि॥ ॥अमितांगभैरवपूजा
बलि॥ ॥ॐ क्लीं अमितांगभैरवाय पादुका॥बलि॥२रुद्रभैरवाय३॥बलि॥चाण्डभै-

रवाय३बली॥२क्रोधभैरवाय३बलि॥२उन्मत्तभैरवाय३बली॥२कपालिशभैरव३॥बली॥२
भीषणभैरवबली॥२संहरभैरवाय३बलि॥ ॥हेतुकादिभैरव॥ ॥ॐ क्लीं हेतुकभैर
वाय पादुकां बलि॥२अग्नीवतालभैरवाय३बलि॥२त्रिपुरातकभैरवाय३बलि॥२अं
ग्रीजिकाभैरवाय३बलि॥२कालाशभैरवायबली॥२कलालीशभैरवाय३बलि॥२ऐक
पादभैरवाय३॥बली॥२भीमरूपभैरवाय३॥बलि॥हानकभैरवाय३॥बली॥अवरभैरवा
य३॥बलि॥त्रिगंजली॥ ॥हंससं॥सिद्धिमातंगीश्वरीनमः पादुकां॥बलि॥चदंग॥त्वा
कमहाबलीनधुनकेआवाहनादासुडांदेरीत॥ ॥शितकलंकबलि॥ ॥अथगणेश
पूजा॥ ॥श्रीसप्तर्षिदेव॥आधारशक्तित्यादि॥मुखासनावपादुकां॥सिद्धाय

अथ ध्यान ॥ ॥ ॐ ॥ सिंहासनास्थिता देव पञ्चवक्त्रं गजानन ॥ पूर्वकुम्भसंकाशं दक्षिणोक्त
 भ्रमोभितः ॥ तुल्यमूर्तरमित्याहुः क्षीरवर्णो नृपाश्रमे ॥ उद्धुक्ते तु संकाशं शुद्धस्फटिकसं
 निभं ॥ त्रिपञ्चनयनं युक्तं देशवाङ्गणेश्वरः ॥ अक्षभूलं वलाभूलं सिद्धिपात्रं च दक्षिणो ॥
 पाशुमुद्रलं हस्ताच भयालङ्कृतमेव च ॥ विन्दुमुद्राधारामे सर्वालंकारसोभिताः ॥ हिम
 रत्नाहिभूषाङ्गो सर्पजशोपवीतको ॥ गजमुक्तांचहारं च सोभितापरमेश्वरः ॥ वामो हृष्टाग
 नादेवी च वलाशक्तो ये श्वरी ॥ तप्तकाञ्चनसंकाशा हेमकुण्डलमण्डिताः ॥ सर्वालंकारभू
 षाङ्गोऽसौ मूर्त्यो महोदरी ॥ वराभयकरी देवी दिव्यवस्त्रविभूषिता ॥ सर्वा विघ्नहर्तुं देवं पू
 जनीया गणेश्वरः ॥ इति ध्यानपूज्यं नमः ॥ वलि ॥ ऐं पक्रौं क्रौं क्रूं गां गीं गूं गें गौं गैं गूं

लगणेश्वराय ग्लौं ग्लौं ग्लूं ग्लेंः क्रौं श्रीमहागणपतिनाथाय मेहे श्वरतनयाय हे स्वमूर्तये गजमु
 खाय पिङ्गलवर्णाय दशभुजाय क्रौं श्रीं ऐं पात्रं च वलाशक्ति सहिताय महापञ्चासंगरास्त्रपाय
 स्वेतमुखाय चतुर्गणनाथ सहिताय सांगाणाय संगण पीलाणाय सिद्धिरिद्धिप्रदे सर्वविघ्नप्रशम
 निसर्वदुःखप्रमोचनिः सर्वपापकलहनाशाय २ पात्रं च मंत्रं च दूर्गाय २ भंजय २ महाइष्टलाभ
 यादि सर्वतो गंगा नाशाय २ सुखः सोभाग्य संपत्ति संतति आयुर्गणाय वलमोभयार्थं दधनधा
 न्यविद्यादि पशुवाहना २ वृद्धयश्च तेजश्च कान्ति मनोऽर्था प्रायश्च देवनामहाविघ्नप्रमर्दयश्च नाश
 यश्च सर्वदुःख हृदयश्च सर्ववन्धनं मोचयश्च वस्त्राभिवारनायश्च सर्वशान्ति कुरु २ क्रौं २ इमां अलीवली
 पिशितं वलिं गुरु २ तु २ मुरु २ वलिं गुरु २ गणपतिनाथाय ग्लौं ग्लौं ग्लूं ग्लेंः स्वाहा ॥ त्रिगजाननो ॥ ॥

२३

ताम्रपादुकां ॥ अदंगवली ॥ ऐं ह्रीं श्रीदुधतीशक्ति श्रीपादुकां ॥ ऐं ह्रीं कोमलशक्ति श्रीपादुकां ॥
ऐं ह्रीं श्रीविदितराजाय शक्ति ॥ साहताय ॥ ऐं ह्रीं अर्जुनाय ॥ शक्ति साहताय ॥ ऐं ह्रीं श
कु ॥ लायदेवाय शक्ति साहताय ॥ ऐं ह्रीं सहदेवाय ॥ शक्ति साहताय ॥ हेतुकादी ८ अ ॥ ६
सितांगादी ८ ॥ आवाहन मुद्रादर्श ॥ त्वा ॥ कवली ॥ इति श्रीभैरवाय पूजा ॥ ॥ अथ वरुणनाग
राजपूजन ॥ ॥ श्रीसप्तर्षिः त्रिदेवः ॥ आवा शक्ति त्वादी ८ ॥ मकरासनाय पादुकां ॥ ध्यान
ॐ अं गोमहोराजा पाशहस्ती महाविषः ॥ हिमकुन्दे तु वसामा मणिरत्ने विभूषितं ॥ ध्यानपुष्पं
यमः ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय पादुकां ॥ ॐ ह्रीं वां वाभुको पा ॥ ॐ ह्रीं ठं ठं सकार्य ॥ ॐ ह्रीं कं कं कं ठं
य ॥ ॐ ह्रीं पं पं प्राय ॥ ॐ ह्रीं मं मं लप प्राय ॥ ॐ ह्रीं सं सं शोष पा लाय ॥ ॐ ह्रीं कं कं कली काय

त्रिपांजली ॥ ॐ ह्रीं मणिनागज्वालयै ॥ ॐ ह्रीं वरुणनागराजिभ्यो ॥ ॐ ह्रीं वरुणाशक्तये ॥
यदंगवली ॥ ॐ ह्रीं सर्वनागानां गरालः स ॥ ॐ ह्रीं वरुणनागिन्यो जननाग ॥ कुलाय सगलाय
रिताय यत्र मां पूजं च दना अतादि तन्दु लंजी वली ८ २ स्वाहा ॥ आवाहन मुद्रादर्श ॥ हेतु
कादि असितांगादि मुद्रादर्श ॥ त्वा कवलि ॥ इति वरुणपूजा ॥ ॥ ॥ भैरवः मूलत्रया
जालित्वा कवलि ब्रह्मान्यादि ८ असितांगादि हेतुकादि ८ वलि ॥ त्वा कवलि ॥ धुनका ॥ योऽ
मूलवलि ॥ ॥

विष्णुपूजा

अथ पुस्तकानामुक्ता ॥ ॥ गुरुनमस्कार ॥ न्यास ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं वं अस्त्रायक ॥ ५ वं कलि
 सुकाय नमः ॥ ५ वं अनामिकाय नमः ॥ ५ वं मध्यमाय ॥ ५ वं तलाय ॥ ५ वं अंगुष्ठाय नमः ॥
 ५ वं कर्तारपुत्राय नमः ॥ ५ वं हृदयाय ॥ ५ वं शिरसे स्वाहा ॥ ५ वं शीखाय वो वत ॥ ५ वं कवचाय हुं
 ५ वं नेत्रत्रयाय पाद ॥ ५ वं अस्त्राय कत ॥ जलपात्र पूजा ॥ ॥ गायत्री ॥ ॥ ऐं बुद्ध्याय गोविन्दे
 हंसवाहनाय कीमहे तन्नो बुद्ध्याय गोविन्दे द्याव ॥ ॥ अर्घ्यपात्र पूजा ॥ आत्मपूजा ॥ श्रीमत्पती
 आवाहन ॥ त्रिदेव ॥ ह्रीं वसुधापत्निलिङ्गा देवी सदानन्तक्षेत्रपालाय पादुकां ॥ ॥ बहूक
 गण योगिनी आवा ॥ हन्रचस्य मुद्रा ॥ आधार शक्तित्यादी ॥ हं सास्त्राय पादुकां ॥ ॥
 ध्यान ॥ परोक्षनाहं मसंकासं द्वादशं भुजश्रुतिना ॥ द्युरवदु तथा भूलं समं कुशपाशकं ॥ दश

हस्तधरा देवी वामस्थिकलशोभिता ॥ पाशकं फेटकं हस्तपात्रश्रपिना किनी ॥ केशाकर्कशाकं
 देवं अभयभयनाशिनी ॥ हं सास्त्रं महो देवी सोम्य रूपं स्वरूपिणी ॥ सर्वालंका सोभाग्यं सर्वं
 संपातिदायिणी ॥ पूर्वस्यादि समास्थाय संताभयनाशिनी ॥ रुद्रचराटा प्रशंनोयं सोमं सिद्धि मे न
 सिद्धिदं ॥ इति ध्यानपूष्यं नमः ॥ ॥ त्रियाजाल ॥ ऐं व अत्रा इरी उरु के गुरुल्लु ए ऐं ओ ओ
 अं अः रुद्रचराटा अं वं ह्मायणी देवी ह्रीं भमिता रुद्रैव नाथ पादुकां ॥ ॥ अं जया देवी
 पादुकां ॥ अं विज जया देवी ३ ॥ अं जयति का देवी ३ ॥ अं अपराजिता ये ३ ॥ अं नदाये ३ ॥
 अं भद्रायै ३ ॥ जयाये ३ ॥ अं श्रीमाय ३ ॥ अथ तेन वलि ॥ ॥ हं सास्त्राय पादुकां ॥ वृषामनाय ३
 मयूरास्त्राय ३ ॥ गरुडास्त्राय ३ ॥ महिषास्त्राय ३ ॥ गजास्त्राय ३ ॥ पिताम्नाय ३ ॥ नरास्त्राय

य ॥ ब्रह्मा न्यादि ॥ अहिताक्ष ॥ प्रयागदि ॥ क्रौंचमाग महाशत्रुपालाय पादुकां ॥ क्रौंच
 दृगाक्षत्रपालाय ॥ क्रौंचोलाग्रक्षत्रपालाय ॥ क्रौंचदृहास महाशत्रुपालाय ॥ क्रौंचवंती
 क्षत्रपालाय ॥ क्रौंचोन्नमहाक्षत्रपालाय ॥ क्रौंचकामुक महाक्षत्रपालाय ॥ क्रौंचवीर महा
 क्षत्रपालाय ॥ ॐ क्रौंचदेवीकोट महाक्षत्रपालाय ॥ ध्वनबालि ॥ ॥ जयादेवी पादुकां ॥ ॐ श्री
 विजयादेवी ॥ ॐ श्री अजितादेवी ॥ ॐ श्री अपराजितादेवी ॥ ॐ श्री जम्बूदेवी ॥ ॐ श्री
 लम्बूदेवी ॥ ॐ श्री मोहनीदेवी ॥ ॐ श्री आकर्षणीदेवी ॥ ध्वतेनबालि ॥ ॥ हितुका
 दो ॥ ॐ क्रौंचहेतुकभैरवाय ॥ २ त्रिपुरातकभैरवाय ॥ २ अग्निवतालभैरवाय ॥ २ अग्नीजोक्रा
 भैरवाय ॥ २ कालाक्षभैरवाय ॥ २ कलालीमभैरवाय ॥ २ एकपादभैरवाय ॥ २ भीमरूपै

१ वाय ३ ॥ २ हात क भैरवाय ॥ २ अ न र भैरवाय ३ ॥ ३ ध ते न वलि ॥ ॥ इन्द्रादि १० ॥ मूल मंत्र न त्रिया
जली ॥ ३ ॥ ऐ व अँ आँ वँ ईँ वाँ वौँ वूँ वाँ श्री वृहायणादि वी क्रौं अशितांग महा भैरवाय पादु कां ॥ ३ ॥
यदंग ॥ वलि ॥ त्वा क महा वली ॥ ॥ ऐं व जया च विजया श्री व जयंती आ पा जिता ॥ नन्दाम
दा जया भीमा कला चैव कस्तथा ॥ आवाहनादि पद्म योनी मुद्रादर्शित ॥ स्मरण पातव
लि ॥ ऐं व हूं पूर्व स्म शानाय पादु का ॥ ऐं व हूं महा वला वीर श्री शानाय पादु कां ॥ ॥ पश्चिम दे
गु या इन्द्राय ॥ ॥ वलि हाय के माल को ॥ नीवी न त्रियां जली ॥ ॥ ध ते वृहायणा पूजा
॥ ॥ अथ मोह भरी पूजा ॥ ॥ गुह नमस्का ॥ ऐं व मै अत्याय फट् ॥ ऐं व मां कानि ह्यनमः ॥
ऐं व मी अनामिकाय २ ॥ ऐं व मू मध्यामाय २ ॥ ऐं व मै तर्जनिमाय २ ॥ ऐं व मो भद्रुमाय २ ॥ ऐं व मः क

[illegible]

मंत्रननिपाजली ॥ ऐं पद्मे ईं कं वंगं घं ङं कूं श्री मोहे श्री देवोः कूं हूं भैरवनाथपादुकां ॥ ॐ दीवयो
निपादुकां ॥ ॐ महायोगिनिपा ॥ ॐ सिद्धि योगिनिपा ॥ ॐ गणेश्वरीपा ॥ ॐ साकिनीपादु ॥ ॐ
कारात्रीपा ॥ ॐ उर्द्ध केशीपा ॥ ॐ निसाकरीपादु ॥ श्वतेन वलि ॥ ब्रह्माद्यादि ॥ प्रयागादी ॥
प्रयाग वरुण कोलापूर अट्टहास जयंतिपूर चरित्र ऐकाम देवीकोत ॥ ॥ जयादी ॥ जया
विजया जयंति चामरा नन्दा भद्रा जया भोमा ॥ ॥ हेतुकादी ॥ हेतुक अग्नीवेत्ताल त्रि
पुरातक अग्नीजिह्वा कालाक्षस कलालीन ऐकपाद भोमरूप हानक अचल ॥ ॥ अ
सितागादी ॥ असिताङ्ग रुरु चण्ड क्रोध उन्मत्त कपालीस भोयन मंहार ॥ ॥ जयादी ॥
जया विजया अजिता अपराजिता माहिनी जंभनी आकर्षणी शोभनी ॥ ॥ ब्रह्माद्यादी ॥ ॥

इडादी ॥ इडा अग्नौ जमाय नेत्रे न्याय वरुण वायु व्याय कुबेराय इशान श्वेत नवलि ॥ पश्चिम देव
यानाहय ॥ त्रीयांजली ॥ ॥ यदङ्ग ॥ बलि ॥ आवाहनादी ॥ त्रीभूलो मोनि मुद्रां ॥ त्वाक महाबलि नभूरके ॥ १२
इति महेश्वरी पूजा ॥ ॥ अथ कोमारी पूजा ॥ गुह्य नमस्कार ॥ न्यास ॥ ऐं पकं अक्षय फट् ॥ ऐं पको कनि
स्तकाय नमः ॥ ऐं पको अनामिकाभ्यां ॥ ऐं पकं मध्यमाय ॥ ऐं पकं तर्ज्ज्याय ॥ ऐं पको अंगुष्ठाय ॥
ऐं पकं कारटलपृष्ठाय नमः ॥ ऐं पको हृदयादी षट्पङ्क ॥ जलपात्र पूजा ॥ गायत्रि ॥ ॥ ऐं कुलकोमारी
काये विमले मंत्रकोटिस्पधीमहे तत्रो कोमारी प्रचोदयात ॥ ॥ अर्घ्यपात्र पूजा ॥ आत्म पूजा ॥ श्रीमं
स्वर्तो आवाहन ॥ त्रिदेव ॥ आसन ॥ महिषास्त्राय नमः ॥ आध्यात्मिक ॥ ऐं मां मां मूं मूं जमायः
हृदहस्ताये पुटाधिपतये महिषवाहनाये नमः ॥ ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं शो शो शो श्रुं श्री अग्नीदेतो वीलाय हस्तये

श्रीकान्त की देवी स्वशक्ति स्वपरिवार साहिताये धामां कुले महाश्मशानाधिपतेय श्रीकोलापूर महाश
त्रे उं ह्रीं श्रीचण्ड महाभैरवाय श्रीकोमारी पाण्ड्या अलिबलि पिशित महापूजा गुरु २ वसिष्ठ गुरु २ स्व
हा ॥ १ ॥ आध्यात्मिकायादी ॥ मयुरासनमाये पादुकां ॥ ध्यान ॥ ॥ ऐं मयुरासनमाधुवावालाकः
कोटिभान्विता चतुर्भुजा भमाला च वामेशक्ति धरावरा ॥ वरदा वामे कलं च सर्वा लंकार भूषिता ॥ चवर्ग पू
जये देवी स्वदेह नमः संयुतं ॥ देवी कृते नवर्ते न पूर्ववत् सर्वकारयेत् ॥ इति ध्यान पूष्यं नमः ॥ ॥ ऐं प
उं ह्रीं चण्डोगा चै ह्रीं जै ह्रीं त्रं भूँ कों श्रीकोमारीका विम्वपादुकां ॥ बलि ॥ ह्रीं चण्डभैरवनाथ पादुकां
३ ॥ ह्रीं गंगेश्वर पादुकां ॥ ॥ ह्रीं घोषनीपा ॥ ह्रीं सुलोय ॥ ह्रीं पबनाङ्गीपा ॥ ह्रीं उलापिकाय
ह्रीं भोयनाय ॥ ह्रीं महातन्दाय ॥ ह्रीं ज्वाला मूर्त्तौ ॥ श्वेत नवलि ॥ ब्रह्मायादी ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं व

ह्याणी महेश्वरी कौमारी देववी वाराही ऐन्दवारी चामुण्डा महालक्ष्मी ॥ ॥ असितांगादी ॥ ॐ
 क्रौं अमितागम्भैरवाय रुद्र क्रौं उन्मत्त कपालीस भीषणा मेहरा ॥ ॥ प्रयागादी ॥ ॐ क्रौं प्रया
 गेश्वर वरुण कोलापूर अरुहास जयन्तिपूर चरित्र ऐकामुक देवीकोटक्ष ॥ ॥ जयादी ॥ ॐ
 क्रौं जयादेवी विजया अजिता अपराजिता जम्भनी स्तम्भनी मोहनो आकषणी ॥ ॥ हेतुकादी ॥
 ॐ क्रौं हेतुक अग्निवेताल त्रिपुरातक अग्निजिह्वा कालाक्ष कलालीन एकपाद श्रीमरुत हातक
 अचर ॥ ॥ इन्द्रादी ॥ इन्द्र अग्नी जमनेकृत्य वरुण वायुय कुबेर इशान ध्वतेन वलि ॥ पश्चिम
 देगुयानाहय ॥ मूलमंत्रनीत्रियांजली ॥ अदंग ॥ त्वाकली ॥ आवाहनादि त्रिशिखायेनि मुद्राद
 शक्त ॥ तपणा ॥ ॥ अथ वैभवो पूजा ॥ गुरुनस्कार ॥ न्यास ॥ ऐं पर्व अक्षय फल

१४

वैभवो पूजा

ऐं पर्व कनिष्ठाया ॥ ऐं पर्वी अणामिकाय ॥ ऐं पर्व मध्यमाय ॥ ऐं पर्व तर्जनीयाय ॥ ऐं पर्व अंगुष्ठाय
 ऐं पर्व कारटलपुष्पाय ॥ ऐं पर्व हृदयाय त्यादि षट्शङ्ख ॥ जलवान ॥ ॥ गायत्रि ॥ ऐं वैभवाय
 विप्रहे गरुडासनाय धीमेहे तत्रो विष्णु प्रबोदयात् ॥ ॥ अर्घ्यपात्र पूजा ॥ आत्मपूजा ॥ श्रीमत्पती
 आवाहन ॥ त्रीदेव ॥ प्रेताम्नाय नमः ॥ ऐं पक्षांसीं भू भुवः ॥ नैऋत्याय स्वर्ग हस्ताये राक्षसाधीपतये
 येनमः ॥ ऐं पक्षांसीं भू भुवः ॥ श्रीअग्निजिह्वा यक्ष्मे श्रीजितादेवी स्वशक्ती सहिताये
 स्वपरिवाराय घोराय काराय महेश्वर शशानाभिपतये श्रीअरुहास महाभद्रपालाय नमः श्रीको
 धभैरवाय श्रीवैशुवीपरास्वा अलिवलि पिशिते महापूजा गुरु स्वाहा ॥ संवर्तन त्रिदेव ॥ आ
 धारशक्त्यादि ॥ गरुडासनाय नमः ॥ ध्यान ॥ ऐं स्वर्गश्वासन मारुधाः स्वामवर्णमहा इति

सर्वलंकारोभातिचतुर्वीरुविगजिते ॥ चक्रकोमोदकीवामे वरदापानपानधाम ॥ तवर्गेपूजय
 देवीदेविकुटं तथैव च ॥ पूर्वध्याययते देवी चक्रेश्वरी प्रसिद्धिगा ॥ मरुतकुटसमायुक्तं पूर्वस
 र्वचकारयेत् ॥ वैष्णवी पूजयेत् एवं सर्वकामार्थसिद्धिदा ॥ शतिध्यानपुष्पं नमः ॥ ॥ त्रियांज
 ली ॥ ऐं धं ठं डं ढं णं उं ऊं चण्डनायिका द्यौ श्रीवैष्णवी देवी क्कां क्रोधभैरवनाथपादुकां ॥ ॐ
 पिशाचीपा ॥ ॐ हस्तिनीपादुकां ॥ ॐ जय श्रीपानीपा ॥ ॐ धूर्जतिपा ॥ ॐ विभक्तनीपा ॥ ॐ
 सर्वसिद्धिनीपा ॥ ॐ तुलियपा ॥ ॐ इक्ष्वायीपा ॥ श्वेतनवलि ॥ ॥ वृक्षाद्यादि ॥ ॐ क्रां वृक्ष
 ह्माणी मोहेश्वरी कोमारी वैष्णवी वाराही ऐन्दुाणी चामुण्डा महालक्ष्मी ॥ ॥ अमिता
 गादीभैरव ॥ ॐ क्रां अमिताभ मरुचण्ड क्रोध उग्रत कपालीस भीमरा संहा ॥ ॥ प्र

१५

यागादि ॥ ॐ प्रयाग वरुण कोलापूर अट्टहास जयति चरित्र ऐकमु देवीकोत ॥ ॥ जयादी
 ॐ क्रां नया विजया अजिता अपराजिता जंभवी स्तम्भनी मोहनो आकर्शनी ॥ ॥ हितुकादी
 ॥ ॐ क्रां हेतुक अग्निवेताल त्रिपुरान्तक अग्निजिह्वा कालाभ कलातीन ऐकपाद भीमहृ
 हातक अच ॥ ॥ इन्द्रादी ॥ ॐ इन्द्र अग्नी जम्भनेत्र त्र्यम्बक वायुय कुबेर ईशाण श
 तेन बलि ॥ ॥ त्रियांजली ॥ पश्चिमदेगुलीयाय ॥ त्वाक प्राहवलि आवाहनादौ ॥ मुखयो
 निर्मुखां दर्शित ॥ श्वेतवैष्णवी पूजा ॥ ॥ ॥ अथवागही पूजा ॥ ॥ गुरुनमस्कार ॥ ग्या
 स ॥ ऐं धं षं अक्षयफत ॥ ऐं धं षं कनिष्ठाय नमः ॥ ऐं धं षं अक्षयिकाय ॥ ऐं धं षं मध्यमाय ॥ ऐं
 धं षं तर्जनी ॥ ऐं धं षं अंगुष्ठाय ॥ ऐं धं षं कर्तलपृष्ठाय ॥ ऐं धं षं हृदयाय ॥ ऐं धं षं जलपान ॥

गादीपूजा

अर्घ्यपात्र-आत्मपूजा ॥ गायत्री ॥ ॥ ऐं वा ए हि देवा प्रहे महिषाशनाय धीमेहेत नो नु राउ प्रचोदः
 यात ॥ अर्घ्यपात्र-आत्मपूजा ॥ श्रीमन्मूर्ति आवाहन ॥ त्रिदेव ॥ मकरास्त्राय नमः ॥ ऐं प वाँ वीं वूं
 वूं वरुनाय पाशहस्ताय जलाधिपतये स्वीति स्वर्गार संहिताय युतीधमस्तानाधिपतये ज
 नै यन्त्रिपूर महाशत्रे लृलु श्रीं उन्मन्तमाह भैरवाय श्रीवा ए हि देवा अलिबलिपिशिते म
 हापूजा गुरु शिदि देहि कुरु स्वाहा ॥ ॥ आधार शक्ति यादि ॥ महिषास्त्राय नमः ॥ ध्या
 न ॥ ॥ महिषास्त्राय नमः ॥ हाश भा रा भूषिता ॥ भुदा मुखदुस्त्रा ना द्वादि चन्द्र मुख भूमा
 शिवनेत्रावभाषते भुजचत्वार संयुता ॥ द्रुक्कालवदना भुजासमदधारीणी ॥ दधकृष
 गदाचासि कीर्त्तिकापालवामका ॥ वरदा वामकापाल सर्वलंकारभूषिता ॥ तवर्गेणो पूज्य

त्रेशकी कृत्तये क्व ॥ मुद्रादिपूर्व वत्सर्व पूजिता सर्वकामदा ॥ इति ध्यान पूर्व नमः ॥ ॥ त्रियाजली ॥
 ऐं प तं थं दं धं नं लूं लूं वणो ग्रा वाँ वाँ वूं वूं श्री वा ए हि देवा श्रीं उन्मन्त भैरवनाथाय पादुकां ॥ ॐ कूं कालि
 पादुका ॥ ॐ भास्वरी ॥ ॐ दीर्घायु ॥ ॐ धुम्राक्षि ॥ ॐ कलरूपिय ॥ ॐ मातंगी ॥ ॐ कालिदिशि
 ॐ त्रिपुरात्रकी ॥ श्वतेनवली ॥ ॥ विह्वान्यादि ॥ ॐ कूं वहाणी मोहेश्वरी कोमारी वैष्णु
 बी वाराही ऐन्द्राणी चामुण्डा महालक्ष्मी ॥ ॥ असितांगादी ॥ ॐ कूं असितांग मू च
 ण्ड क्रोध उन्मत्त कपालास भोषणा संहार ॥ ॥ प्रयागादी ॥ ॐ कूं प्रयाग वरुण कोलापू
 अहहाश जयन्त्रि चरित्र रेकाश देवीकोत ॥ ॥ जयादी ॥ ॐ कूं जयाय विजयाय अजिता
 अपराजिता जंमनी मोहणी आकर्षणी ॥ ॥ हेतुकादि ॥ ॐ कूं हेतुक आश्रित ताल त्रिपु

ॐ मुक्तांगी पा ॥ ॐ नमो जनी ॥ ॥ वृद्धायादि ॥ ॐ कौमुदीयादी पादुकां ॥ महे श्वरी कौमा
 रा वैशुवी वाराही इत्याणी चामुराज महलक्ष्मी ॥ ॥ अमितागादे ॥ ॐ कौमुदीयादी कुरु
 क्रोध उन्मत्त कपालीस भीषणा मन्त्र ॥ ॥ पुष्पागादी ॥ ॐ कौमुदीयादी कुरु
 हस्त जयंति पू चरित्र एकाम देवीष्ट महाभद्रपाताय पादुकां ॥ ध्वजेन वलि ॥ ॥ जयादी ॥ ॐ
 कौमुदीयादी विजया अजिता अपराजिता जंभणी मोहनी आकर्षणी ॥ ॥ हेतुकादी ॥ ॐ कौ
 हेतुक अग्निवेताल त्रिपुरातक अग्निजीवा कालाक्ष कलालीन ऐकपाद भीमरूप हातक अ
 चल ॥ ॥ इत्यादी ॥ ॥ ध्वजेन वलि ॥ त्रियांजली ॥ पश्चिम देगुलि पाय ॥ त्वाकमहावलि ॥ आ
 वाहनादी मोनि मुद्रा मुद्रां दर्शित ॥ तर्पणा ॥ इति इत्यादी पूजा ॥ ॥ ॥

अथ चामुण्डापीथपूजा ॥ ॥ गुरुनमस्कार ॥ न्यास ॥ ऐं पञ्च अक्षय फल ॥ ऐं पञ्च कनिष्ठ काम नमः ॥ ऐं प
 चिं अणामिकाय ॥ ऐं पञ्च मध्यमाय ॥ चै तर्जयाय ॥ ऐं पञ्च अंगुष्ठाय ॥ ऐं पञ्च कर्तर पृष्ठाय ॥ ऐं पञ्च
 हृदयाय नमः त्यादि ॥ ॥ जलपात्र पूजा ॥ गायत्री ॥ ऐं चामुण्डाय दीप्तिहे कृष्णरूपाय धीमहि त
 नो मुण्ड प्रचोदयात ॥ अर्घ्यपात्र पूजा ॥ आत्म पूजा ॥ श्री सत्यतो आवाहन ॥ त्रिदेव पूजा ॥ ऐं पशु
 वामनाय ॥ ऐं पञ्च सौम्यैः सुं सुं कुबेराय गदाहस्तो नमः ॥ ऐं पञ्च कौमुदीयादी कुरु
 श्री ऐकपादाय हस्तैः श्री कपला देवी स्वशक्ती स्वपीरवा महिताय महाएव भ्रमशाना
 धीपतये ऐकाग्रक महाभद्र ॐ ॐ भीम नमो महाभैरवाय श्री चामुण्डा पराया अलि वलि विधि
 ते महापूजा मुक्त भोग देहि कुरु स्वाहा ॥ ॥ आधा मक्ति त्यादि ॥ ऐं पुता म्नाय पा

धान ॥ ॥ ऐं डालिमी कुमुम पलानिने न चन्द्र रूपेणी ॥ द्रुवा क हलध द मा भुजा सा मुण्ड धारि
 नी ॥ पवाही शव अना च धृता च पुर्व ले भुजे ॥ त्रयोद मुख एडे मु मुखाली न हि च चिका ॥ द्विपि चर्मप
 रधाना मेपला घण्टा रकां ॥ खड्ग फेत क धरा च डमरु ह्य द्वांग मेव च ॥ कर्त्तु मुण्डा मर्ता च शो ॥ १६
 तेर क कपोल धा ॥ पिशाच भूत वेताला शिवा वमुसाहि का ॥ ऐव विधा य चा मुण्डा य वर्ग पूज यत्न
 दा ॥ दावा सी वीज पूर्वाभि मातृ कृतं तथै क्व ॥ मुडा द्या पूर्व वन्दे वी तोतर वस्तु तोविता ॥ अभि रू मि
 द्वि द्या देवी चामुण्डा चण्ड मालिका ॥ शक्ति ध्यान पूजं नमः ॥ ॥ त्रियांजली ॥ ऐं यं रं लं वं ओं ओं च
 एड रूपा यों यी यूं यूं श्री चामुण्डा देवी क्रीं भी वरा भैरव नाथ पाडु कां ॥ ॐ बीर भद्र पाडु कां ॥ ॐ महा का
 ली ॥ ॐ कं का ली ॥ ॐ विष्णु तान नाथ ॥ ॐ क्रोध धराय ॥ ॐ भीम भद्राय ॥ ॐ वायु वेगाय

ॐ भयान ना ॥ ध्वजे न वली ॥ मूल संत्रे न च डंग वलि ॥ ॥ वल्लभ्या दी ॥ ॐ क्रीं वल्लभायणो मोहेश्वरी को
 मारि के भुवी बाहो इन्द्रायणी चामुण्डा महा लक्ष्मी ॥ ॥ अमिता गादि ॥ ॐ क्रीं अमितांग रू
 चण्ड क्रोध उग्रत कपालि म भी वरा मंहार ॥ ॥ प्रयागादि ॥ ॐ क्रीं प्रयाग वरुण कोला पू
 अट्ट हास जयति चरित्र ऐकाग्र देवी कोट ॥ ॥ जयादि ॥ ॐ क्रीं जया विजया आजिता अप
 राजिता जम्भणी मोहणी आकर्षणी ॥ ॥ हेतुकादी भौ ॥ ॐ क्रीं हेतुक अग्नि वेताल त्रिपुरातक अ
 ग्नि जिह्वा कालाक्ष कलालो न ऐकपाद भीम रूप हातक अचल ॥ ॥ इन्द्रादि ॥ इन्द्र अग्नि यम
 वरुण वायु वरुण कुबेर य इशाना य ध्वजे न वलि ॥ ॥ त्रियांजली ॥ पाक्ष मदे गुयाय ॥ त्वाक महा वली
 आवाह नादि तर्पन विंश योनि मुद्रां दर्शय ॥ शक्ति चामुण्डा पूजा ॥ ॥ ॥ अथ महा लक्ष्मी ॥

महालक्ष्मीपूजा

गुरु नमस्कार ॥ स्वास्त ॥ ऐं प मं अ ह य क न ॥ ऐं प मं क नि ह य न म ॥ ऐं प मं अ ना पे का य ॥ ऐं प मं म ध
 प्रा य ॥ ऐं प मं त र्ज या य ॥ ऐं प मं अ गु स्ता य ॥ ऐं प मं क र्ता पृ ष्ठा य ॥ ऐं मं हृ द या य त्पा दी ॥ ॥ जल
 पात्र पूजा ॥ गायत्रि ॥ ॥ ऐं महा लक्ष्मी वि प्र दे मिं ह वा ह्णा य धी म हे त न्नो ल क्ष्मी पु चो द या त् ॥ ॥
 अर्घ्य पात्र पूजा आत्म पूजा ॥ ओम स्वर्ती आ वा ह न ॥ त्रि दे व ॥ **ब्रह्मा म न य न मः** ॥ ॥ ऐं प मं क र्ता क र्ता क र्ता
 इ शा ना ये त्री भू ल ह्स्ता य भू ता र्धा पि त ये न मः ॥ ऐं प मं क र्ता क र्ता क र्ता श्री भो म न्पा य ह्मे
 श्री अं वि का दे वी म्ब शा के स्व र्पा वा म हि ताय शि शु मा र्म हा म्ब शा ना धि प त ये श्री अं वि का दे वी म्ब शा
 क्ष त्रे अं अः श्री मं हा र्मै र वा य श्री महा लक्ष्मी प र म्मा अ लि व लि पि शि ते म हा पू जा गृ ह्ण २ का मं दे हि कु
 ह्नु २ स्वा हा ॥ ॥ आ धा र श क्ति त्वा दि ट् ॥ न र ह्ना य वा ॥ सि हा म न य पा ॥ ध्या न ॥ ॥ सि ह्ना को

दि च द्या भा त्रि ने त्रा मा चतु र्भु जा ॥ र व द्रु फे त क धा दे वी व र्ता वा म पा न धा ॥ श व र्गे म र्च णा अ स्तु क त
 ने व तु प्रा त्रि का ॥ पू र्व व म र्च द व्या दि दा प य त्प र मेश्व री ॥ इ ति **ध्या न पू र्ण न मः** ॥ ॥ त्रि या ज ली ॥
 ऐं प मं क र्ता अं अः अ ति च र्णि का शां शी शं शुं श्री महा लक्ष्मी दे वी क र्ता मं हा र्म हा भै र व ना थ पा दु कां
 अं वृ क्षी पा दु कां ॥ अं वे क्षु दी ॥ अं रौ णि पा ॥ ॥ अं च र्चि का ये ॥ अं इ श्व री ॥ अं वा र्ण दी ॥ अं ना
 र सिं हा ॥ अं शि व हू ती ॥ ध्व ते न व लि ॥ ॥ **ब्रह्मा** म्मा दि ॥ अं क र्ता व ह्ना य णी मा ह्ने श्व री को मा
 मा री वे क्षु दी वा र्ण दी इ न्द्रा य णी चा पु र णा महा लक्ष्मी ॥ ॥ अ सि तां गा दी नै ॥ अं क र्ता अ सि तां
 ग र्गु च र्ण को ध उ म्भ त क पा ली स भि ष ण स हा ॥ ॥ प्र या गा दी नै ॥ अं क र्ता प्र या ग व र्
 णा को ला पू र अ ह्ना स ज यं ति च र्चि न ए का म दे वी को र ॥ ॥ ज मा दि ॥ अं क र्ता ज या य वि

जबाम अजिता अपराजिता जंभवी मोहणी आकर्मणी ॥ ॥ हिनुकादी ॥ ॐ फ्रां हेनु क
अग्निवेताल त्रिपुरांतक अग्निजिज्ञा कालाक्ष कलालीन एकपाद भीमरूप हाटक अ
चल ॥ ॥ इन्द्रादी ॥ इन्द्रा अग्न्या जमा वरुणा वायुदे इशा कुवा इशान ॥ ध्वतेन क
ली ॥ ॥ निपांजली ॥ पश्चिमदशगुलिमाय ॥ त्वार्क महाबलि आवाहनादि शीर्ष
योनि मुद्रादर्शित ॥ तर्पन ॥ शक्तिप्रदानेधिपूजाविधी ॥ शुभं म मय्यु ॥ ॥ ॥ ॥
समस्त १६८८ साल नेपाली १०५४ साल फागुन शुद्धि पण्डित ४ गते १७ ध्वयुनुयादीन
म स्वपोदराटीवकहेटोलसुकुलठोकाया हर्षमानवाकायअच्युतानंदक्रमाचार्यन
वाज्याराजवार्नचोयागुगुहसाफूवमोजिमचोयाजूल ॥ ॥

नतो बलिहायके ॥ उत्तर ॥ ॐ ॐ ॐ हे ह्रीं होः लूं ऐ ह्ये हि देवी पुत्रवद्भक्तनाथा कपिलजयाभास
त्रिनेत्र ज्वाला मुखी सर्वविघ्नानाशाय २ सर्वोपचार सहिताः प्रसादात् पूजां वलिंगुस्तु २ हुं फट् स्वाहा ॥ तर्जनी
निक्षेप्य नमः ॥ वद्वक वलिः ॥ अरे गंगा गङ्गा गङ्गे गंगै गौरी गङ्गः गङ्गा पतये वा वा द सर्वजनमेव
शमानय २ सर्वविघ्नहनहन सर्वोपचार सहित वलिंगुस्तु २ स्वाहा ॥ पश्चिम मे मध्य प्रांगु श्याम्पांगणा पति
वलिः ॥ भद्र ॥ ॐ ॐ ॐ साँ क्षौं धूँ क्षौं क्षौं क्षौं दुहे देवि पुत्र उद्धर परिहार स्वच्छानक्षत्रपाल स
र्वविघ्नानाशाय २ रक्ष २ सर्वोपचार सहित पूजा वलिंगुस्तु २ हुं फट् स्वाहा ॥ पूर्व भागे अनामिकांगुष्ठा
भानमः ॥ योगिनी ॥ ॐ ॐ ॐ याँ घ्राँ यूँ यैँ यौँ ग्रः सर्वयोगिनीभ्यः सर्वभूताधिपतिभ्यः डाकिनीभ्यः
साकिनीभ्यः त्रैलोकावासिनीभ्यः सर्वविघ्नानाशाय २ वलिंगुस्तु २ स्वाहा ॥ भद्र ॥ ॐ ॐ ॐ ह्रीं सर्व

विष्णुकृतेभ्यः सर्वभूः पतिभ्यः सर्वभूतेभ्यः इमां पूजावलिंगं २ स्नाह्यं सर्वाङ्गुलीभीः ॥ जीमूतवर्णं
 शत्रेशं बालयज्ञोपवीतिनं ॥ खट्वाङ्गं दण्डं हस्तं च शत्रेशं वटुकं भजे ॥ ॐ ३ उर्ध्वं ब्रह्माण्डं भागे दि
 विभुविगगणे भूतले निष्कले वा ॥ पातालैवानले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थितो वा ॥ क्षेत्रोपीठो
 पपीठादिषु च कृतपदा पूष्यधूपादिकेन ॥ प्रातादेव्याः सदानः शुभबलिविधीना पातु मां वीरं वंशा
 ॥ ॥ पूष्याशतगंधादिनावटुकपात्रेभ्यश्च दण्डः तर्जनी गज योनि मुद्रादर्शयेत् ॥ ॥ सहाय्य
 ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वपीठोपपीठानि द्वापेव च ॥ शत्रोपशत्रुसंदोहः सर्वदिग्भाग संक्षिता
 ॥ १ ॥ योगिनी योगवारेन्द्रा सर्वतत्र समागताः ॥ इदं पर्व महाचक्रे शानाथो वदो ममः ॥ २ ॥ ये भक्ता सा
 धने देवी गुरुपादाब्जनेरता ॥ सर्वसिद्धिप्रदाप्नोमे देवी तेषां भवेत्समः ॥ ३ ॥ वीराणां योगिनीनां च ये

विषयनिर्माहितले ॥ ते दत्तात्रयलिंगदेवोऽसमयाचारमेके ॥ ४ ॥ श्रुतिस्मृतिमनः पूरिः मां समेदोऽपि जी
 वितं ॥ निरुक्तयन्तु दृष्टानां योगिनी गणसं कुला ॥ ५ ॥ कुङ्कुमानिकुस्वपादि दुर्गमित्रानुद्भावि
 तान् ॥ ॐ काण्डियपीठालयः सारप्रकीर्तिता ॥ ६ ॥ ओषधिधातुसंदोहदिशा सुविदिशा सुच
 माहः पातालब्रह्माण्डे सर्वज्ञानात्रेयुच ॥ ७ ॥ योगिन्यो योगमुक्तात्मा समयेति ह्यनुसाधका ॥ वीरकर्म
 सुवीरेन्द्राः सर्वेति नृदेवताः ॥ ८ ॥ सिद्धाश्रुपुत्रकान्त्यः साधकाः स्थितिज्ञायिनः ॥ नगरे वाथग्रामे वा अ
 द्वावावलिङ्गरे ॥ ९ ॥ वापिकुपेकवृक्षे वा शाने मातृमण्डले ॥ नानारूपधराचान्ये वटजाविविधा
 निच ॥ १० ॥ तेपि सर्वेपि संतुष्टा वलिंगं कृतुं सर्वतः ॥ शरणगतोऽप्यहं तेषां सर्वमेतत्फलप्रदं ॥ ११ ॥
 प्रारब्धजन्मयाकर्म यत्करिष्यामि यत्कृतं ॥ वलिपूष्यप्रदानेन संतुष्टा मम चित्तका ॥ १२ ॥ सर्वकर्माः

२३

अज्ञादीवली

निसिधं नु सर्वदोषप्रशानये ॥ शिवशाने प्रशाने श्रीकृष्णं नमामहे ॥ १३ ॥ इति समयवलि ॥ ॥ अथ २
 अज्ञादीवलि ॥ ॥ ऐं प अ म र्वा प कु म्भ थ इ दा चार स्तथे व च ॥ इन्द्र मूर्तिश्च उल्कास्य ऊष्माणे क्रुपुश्रुद २३
 नः ॥ क्रमुकुलप्रकायश्च लृलापादे कदयुकः ॥ १ ॥ ऐरावतश्च ओघाम्वा ओघधीशस्तथापरे ॥ २ ॥ अंतकः
 अर्थवाहश्च कमलश्च खगननः ॥ गौमुखश्चैव धरागरो इयगाः श्रणुधारकः ॥ ३ ॥ छता तोषो जगत्तारव्यो गं
 कारो यह तेश्वरः ॥ टंकपाणिस्तथा शान्ये शानुवधश्च जमलः ॥ ४ ॥ धृक्कर्णो गतीकान्तस्तदिग्भाष्टविरस्त
 भाः ॥ दधुरोधनदश्चैव नागकर्णो प्रचण्डवानः ॥ ५ ॥ फेल्कोरो वीरसिंहश्च भृकुटाक्षो महासुरः ॥ युगांतो रोख
 श्वैव लम्बोष्ठो वत्सस्तथा ॥ ६ ॥ भुकतुण्डवदात्तास्य मुनासो दुहुकस्तथा ॥ क्षयात्तकस्तुपश्चात् क्षत्रपा
 लउदाहृता ॥ ७ ॥ पश्चात्तद्वर्णमुद्रोरे स्थानष्टाः क्षत्रपालकाः ॥ शिववर्णविहीनास्तु क्षत्रपालचतुर्दशः ॥

ऐकलिङ्गे चक्रकारं श्रमशाने च भयावहं ॥ महत्तश्मीव रोधोरे ज्वालामुखी वसेत्सदा ॥ ८ ॥ एवमक्षः वटे
 वाथ विदालवदनो वसेत् ॥ घण्टागवोगुहासे पप्रखण्डे जलावः ॥ ९ ॥ सङ्गमे श्रीधारे श्रपर्वते
 प्रहृतस्तथा ॥ निर्गुरेश्वरो प्रहृन्निराचामनिभद्रकः ॥ १० ॥ रसधेने धराध्वेक्ष यज्ञवाटे प्रकोष्ठुषु ॥
 आर्ये सर्वविद्यादुशाने मधुकम्भतः ॥ ११ ॥ चतुःसर्षा महाविद्या पालयित्वा स्थिता जगता ॥ तत्रः क्ष
 ने सदा कालं वलिपूजानि वेदयेत् ॥ १२ ॥ चत्वारस्तत्र भूपाल द्विजाद्या गृह्णते वलिं ॥ भुवगत रूपक्षी
 च स्वाचारवलि कां शिगा ॥ १३ ॥ नित्याधिका चत्वारः कव्यादा इतले जना ॥ ववरापिंगकेशाश्च पिङ्ग
 भुपिङ्गलोचनाः ॥ १४ ॥ दंष्ट्रा कण्ठश्च त्र्युगाः कपालाभारो ज्वला ॥ कास्मिन् चन्दे श्रीखण्ड मृगाके पी
 नफलाके ॥ १५ ॥ पूर्वैर्वस्त्रैस्तथा छत्रैर्दिव्यैर्धूपैस्तु गुलुलैः ॥ भाविता मदि राद्ये श्रमपूजा पराय
 णैः ॥ १६ ॥ घण्टागवोश्च गीताग्रे स्तर्पिता कामदा सदा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं ॐ ह्रीं हुं अमुकाय अवतरे २ भवेत्

पालमहावतकपिलजयभाभामुर्ज्वालामुखगन्धपुष्पवलिपूजांगुष्ठरभेवहपेणानुहृ २ मुहृ २ ख २ ल २
 फ्रैफ्रैः महादामाधिपतेयेशमस्तवाहोममस्ताहा ॥ १८ ॥ प्रचेनानेन सर्वेषां विधीवद्वलिदानतः ॥ न
 दुर्भिक्षं भवेत्तत्र नोपसर्गादिकं भयं ॥ १९ ॥ नित्यं प्रमुदितो राजा सर्वेषां वल्लभो भवेत् ॥ शिष्यान् लभते का
 मानां ग्रामे च सदा जयेत् ॥ २० ॥ इति अजरादिसेनपालाय वलिंगुद्र २ स्वाहा ॥ इति अजरादी वलि ॥ १ ॥
 अथ चोसाधियोगीवली ॥ ॥ ऐं प जया च विजयाश्चैव जयत्याश्चापराजिता ॥ नन्दाभद्रा जया भीमा
 काश्चैवास्तथा ॥ १ ॥ दिव्ययोगि महायोगि सिद्धियोगि गणेश्वरी ॥ सांकिनी कालरात्री च उ
 र्वकेशी निशाकरी ॥ २ ॥ गंभीरा घोषणा कुलापवनाग्री उवासिका ॥ भीषणा च महानन्दा ज्वाला मुखी
 चैव च ॥ ३ ॥ पिशाचो हस्तिनीश्चैव यक्षणा धूर्जटि तथा ॥ विषभक्ष सर्वा सिद्धि कुर्याच्छतैव च ॥ ४ ॥

हुं कारी भाश्वरी दीर्घा धुमाक्षी करहप्रिया ॥ मातङ्गी काक हरि च तथा त्रिपुरा च नकी ॥ ५ ॥ राक्षसी घोरा
 नादा च रक्ताक्षी विश्वरूपिणी ॥ जयकरी रोहणी भस्माशुष्काङ्गी नभोजनी ॥ ६ ॥ वीरभद्र महाकाली
 कंकाली विक्रान्तनाम ॥ क्रोधाभीमभद्रा च वायुवगाभयानना ॥ ७ ॥ ब्राह्मी च वैष्णवी रोहणी च त्रिकाश
 श्वरी तथा ॥ वाराही नारासिंहो च शिवदूति च यष्टिका ॥ ८ ॥ इदं देवा महायोगि वलिंगुद्रं त्वत्ते मदा
 ॥ क्लीं च वशति योगिनीभ्यो वलिंगुद्रं सर्वशान्तिकुम्भं प्रमसिद्धि कुर्वतु ॥ ३ फट् स्वाहा ॥ इति च उ
 श्वाधियोगिनीवली ॥ ॥ अथ वदिसी योगिनीवलि ॥ ॥ ऐं प चण्डा मण्डा महा नासा दुर्मुखी मुमु
 र्खी तथा ॥ ऐवनी पथमा घोरा सोम्या भीमा महाबला ॥ १ ॥ जया च विजयाश्चैव जयत्याश्चापराजिता ॥ म
 होत्कटा वितुपाक्षी शुष्कमाकासमातृका ॥ २ ॥ जातहारी च संहारी दक्षारी पुष्कोरवती ॥ पिप्पली पु
 ष्यहारी च आसिनी सत्यहसिणी ॥ ३ ॥ भद्रकाली शुभद्रा च भद्रभीमा शुभाङ्गीका ॥ क्षात्रिमशक्तिः

सु. २५

माहा कर्तिका पालधारणी ॥ ४ ॥ द्वात्रिंशे युग्मं ह्योगि शुक्लं च मुण्डं वासिनी ॥ वतिर्ही मंत्र पथेन
॥ द्वात्रिंशे योगिनीभ्यो वलिंगु २ स्वाहा ॥ पो इती वतिशी योगी वलि ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं अस्त्रा कट
स्वाहा ॥ अहं खी नमः ॥ शंख कट की नमः ॥ शान्ति वलि गृ २ स्वाहा ॥ वुहरी नमः रक्ताक्षी नमः श्रमशान वा
सी नमः खेचरी नमः श्रु योगिणी नमः ईश्वर वाय नमः विकटोटी नमः लम्ब कर्चनी नमः हें हें काल की
सः फैं फैं कार फैं सः योगिनीभ्यो वलिंगु २ स्वाहा ॥ ॥ ऐं ५ अं पूर्व पीठ हेतु कक्षेत्र पालाय वलिंगु २
स्वाहा ॥ ऐं ५ कें आमि पीठाधिको रत्रिपुरात्र कक्षेत्र पालाय वलिंगु २ स्वाहा ॥ ऐं ५ दक्षिण पिठाधि
को रअग्नि वेनालक्षेत्र पालाय वलिंगु २ स्वाहा ॥ ऐं ५ नेत्र त्र्यपिठाधिको रआग्नि जिक्ताक्षेत्र पालाय
वलिंगु २ स्वाहा ॥ ऐं ५ वायु ये पीठाधिको रकालीन क्षेत्र पालाय वलिंगु २ स्वाहा ॥ ऐं ५ वायु

४
२५

सु. २५

वापिठाधिको रभीमरूप क्षेत्र पालाय वलिंगु २ स्वाहा ॥ ऐं ५ उना पीठाधिको रयक पादभैरवाये वलिंगु २
स्वाहा ॥ ऐं ५ ईशारा पीठाधिको रभीषण भैरवाये वलिंगु २ स्वाहा ॥ ऐं ५ अभाधिको रहाट कभैरवाये वा
लिंगु २ स्वाहा ॥ ऐं ५ उर्द्धाधिको रगगः राभैरवाये वलिंगु २ स्वाहा ॥ ऐं ५ वर्वापिङ्ग के शाश्रपिङ्ग पिङ्ग
लोचना ॥ दं दुराकाल अयुगा कपालाभरणो ज्वला ॥ कास्मीर नन्द श्री खण्ड मुगा के मोन हर्ष के ॥ प्रये
वस्त्रैस्तथा छत्रै दिव्य धूपै सुधूपिता ॥ भाविता मानि भावेन कर्म पूजा पण्यणे ॥ धराठा बाडो श्री गीता डो
तर्पिता काम दासदा ॥ ॐ ह्रीं अमुक दीप अमुक क्षेत्र पालाय अमुक देवी शक्ति साहिताये अवट २ गृ २
गुरु २ मुरु २ लल २ लल २ लल २ महा दामराधी पतेये सम खबर दोममः स्वाहा ॥ ॥ ऐं ५ बल न बल्लारः
खण्डे शितिरुधिर वसासि धूसि धूप वधो ॥ नानुष्ठा क्रुध पक्षे पशु पिशित मयं सर्वतो पूरय ॥ वज्रेणो

महादेवी

डातकाकनुकः नकागिरिताए वतिशशब्दो ॥ देवीचक्रचिकीयः स्वयामितिबु कोवदि ताता पुनात् ॥
उर्ध्ववृक्षा एतौ वादि विगगणतले निष्कले भूतले वा ॥ पायले वानले वा शलिलपवनयो मत्रः कुत्रस्थितो
वा ॥ सत्रोपीठोपपीठो द्विषु च परिष्कृता पृष्पधूपदी केन ॥ प्रीतादे व्यासदानः भुमवलि विधिना पादुवीरि उ
वन्धा ॥ साद्वे सिद्धे च सर्वे अलि वलि पिशातं पूजां गुरु ॥ स्थाहा ममसा ॥ ते कामई मां पूजां वलिं गुरु ॥ ममः
शात्रं कुर्वतु ॥ इहं इफट् स्वाहा भक्ति शात्रि वलि ॥ ॥ ऐं ॥ कवर्णः कुम्भु मारु पं सु विपुलगता जालपी
ठे जयन्तो ॥ वक्रोणे मध्यपीठे त्रिपथगतियुता देवी भूजातकाए ॥ आचार्यसिद्धि संगे तदनुकुलगते योगि
निर्वा एव शो ॥ युक्ताहं पञ्चकाशं ॥ ५ ॥ लक सह्या देवदेवी नमामी ॥ ॥ श्रीवक्रोवाच ॥ भृगुदेवी यथा तथे
जो वस्यार्थे तथा मया ॥ नागलोके पुरे एमे तस्मिन् नाने महावलि ॥ तत्रैवांतिष्ठते विद्या अमाद्या वा गावितः ॥

महादेवी

तांगृहीत्वा महादेव संसाभयनासिनी ॥ २ ॥ इयं विद्या महादेवी क्षत्रपालास्तुतस्मिता ॥ सत्रावलितिविश्वाता
लभे सिद्धिप्रदायिका ॥ ३ ॥ ऐं ॥ यमाभुदिव्या त्रीदशदि मभुवने मप्रपायलमूले ॥ सत्रोपीठोपपीठे विषमच
तुपथे मेक केवा श्मशाने ॥ ४ ॥ सिद्धोतीरैक वृक्ष उदधि भुमतेरे धुमकाएवतोरे ॥ कोराया पूर्ण गिर्या मय
चपुरवरे भोदियाने प्रधाणे ॥ ५ ॥ जालाक्षे योगमुखि बुपातित नगरे कामरूपे स्वरूपे ॥ उर्ज्यामदहासे
पट्टपट्टहावेला ॥ ६ ॥ श्रीशेले पालि जाते पशुपति निलये हेमविष्णा चलेषु ॥ श्रीकामोका
वादे दे शो मस्तपथगिरे साकिनी साकिनीनां ॥ ७ ॥ काश्चिचायदे शो द्रविमलयके वृक्षवाह्ये कुलेते
स्त्रीराज्य हर्क दोर्क दसिबानके सभेने उहोरे ॥ ८ ॥ ऐं ॥ यमापाणि जाते हिमगिरिशिखरे काश्चिदे शो प्रया
गे ॥ सोरास्त्रे मध्यदेशे भृगुपू नगरे कोणले कामुके वा ॥ ९ ॥ कर्णोरे कोङ्करो वा मगधपुरवरे कर्णकुञ्जे

कलिगे ॥ वक्षो मेहं सवाह हिमजपट लेदो हारव्य ॥ अक्षौह मातृ चक्रे मुणिगनगालये जोहो चंद्र देशे ॥
 रामोरे पूषा राख्ये गिरिगहिर गुहे चांकुरे सिंह नोदे ॥ ४ ॥ वक्षो खे भीमनादे शिवपुर नगरे भद्र कुलेज
 माख्ये ॥ भवध्याख्ये कश्चिन्ने प्रवर्गिरितटे यस्य कूर्मभे चलंका ॥ वाएनस्या विशाले निपठ मुनिथे भुव
 क्ये च मार्गे ॥ मेच्छा ते मेच्छा माले मलयगिरि गुह्य वल्लदेशे पुरे वा ॥ ५ ॥ भद्राक्षे मूलस्थाने प्रकृति पुरवरे सिंह
 कर्णे शशाक्षे ॥ स्त्री भोत्रे व्योम मध्ये सुखर शयने गङ्गा व्यिल्लरेखु ॥ योगिन्या मण्डजाव विवीधवधनुता मातर
 स्तानुसर्वा न ॥ तुष्टाः सिद्धाः सुसिद्धा विविधपद युता दिव्य सिद्धि ददातु ॥ ६ ॥ खड्ग वामे त्रिसिद्धि पापु रविश
 नं खे गीतलोचन म्वा ॥ शत्रूस्तभं लिपुणा अलि वलित जयं स्तंभने सर्वविद्या ॥ दीर्घा युष्मं कवित्वं नि
 धा मगुते कापाडु कां कामसिद्धि ॥ सर्वा एते तादृश तु अलि पिशित रता भैरवे नानुरक्तौ ॥ ७ ॥ इत्युचो

गीमाणि ग्रहाणां गलले विद्युपाते न सौवा ॥ एजद्वारे जलो घविघटयतु भयं ध्यायित श्वस मुराज ॥ चो
 छो फेल्का ॥ याते हहहह हसिते चर्मंति पवन्ती ॥ नृत्यंति मंत्र माता किलिकिलित किलिकोलभ्याया
 क्रिंती ॥ ८ ॥ सा भुक्ता कामरूपाया लवपटहा हाह हुंकार नादा ॥ ओतति क्षणील कण्ठा अमल मुह
 दृश्यो विदु मूर्ध्नि प्रसन्ता ॥ प्रेप्ते प्रेप्ते फकारयति रुरुरु धिं वशाखा यमाना सरोवा ॥ जिह्वा गेलाल
 यन्त्री लललल ललता द्रावन्ती पिवन्ती ॥ ९ ॥ कृष्णा कामाख्य इती अमल गुननुता विदु नादा नली
 ना ॥ सकंते सिद्धि दामा परमपा गता वदितारङ्ग प्रह्ला ॥ प्रागल्भा लोकपालो गत पवन युता प्रार्थि
 वेरलता ॥ मधुखा विदु युक्ता कुलकमल तातारी कुण्डलाख्या ॥ १० ॥ विख्याता दृढशक्तीः स
 चदिशु भुशिवं भीमशो भद्र काली ॥ कांकीं कूं कामरूपा अकुल कुलगता द्विषणी भक्षयन्ती ॥

सापे श्रीकुञ्जिका आधित एतु पामं शरीरि बोध मोघना नु गडा कोल मार्गे कुल न म समये कोलिनी कोरु ना
 र्वा ॥ ११ ॥ आख्याता वाम मार्गे प्रकटित निलया मालिनी विदु देहा । अंकारे मण्ड लेवा अकुल मया यामी
 चक्रे प्रविष्टा ॥ श्रीनाथोत्सङ्गामा प्रबल मुणिगणो चर्चिता श्रीम मूर्तिः सा देवी लोक माता शिव सकल मु
 र्वा मातृका श्रीनाथ चक्रे ॥ १२ ॥ श्रीकण्ठाभ्यर्चमाना चतुयुग सा हिता मध्य लिङ्गे विकार्या । पीठे षा पु
 र्यंती च किचकित कला कोल मार्गे दिती भा ॥ नाया श्रीकुञ्जी कार्या त्रिपथ गति युता श्रेष्ठ एतन्नि प्रका
 र ॥ ता देवी नौमि भक्त्या प्रकटित निलया पञ्च काशं न मामि ॥ १३ ॥ काली कं कातरूपा कलिततर
 वा भीषणी भक्षयति । सा मे श्रीकुञ्जिका र्या प्रकट पट मा ह ज्ञान दिव्यो घ मोघना ॥ इति महावली ॥ ॥
 ऐं वा विद्या महाविद्या त्रिभुलो के बुदुर्ध्व भा ॥ यस्य सति स्तु मुखे देवोऽसूक्तो नात्र संशयः ॥ भूत वेताल

मक्षाश्च गुह्य का वल्ल एभसा ॥ विद्या स्मरणा मात्रेण प्राप्यंति दिशो दशः ॥ अये केचिच्च दुस्साश्च विव
 लश्च गर्दभाः ॥ स्मरनालाशये देवोऽसूक्तं सत्वं च नान्यथा ॥ स्तोत्र बीरावली नामः विद्या एषा पुणर्जिता ।
 कीर्तनाच्च वयं देवी स्मरणात् सर्वसंपद ॥ स्तव पाठकृते नित्यं सौभाग्यं च भ्रिमं मसः ॥ महापर्वेषु
 तर्पनं वलि पूजनं ॥ कुर्यात्तु साधको यस्तु तस्मात्सुखं प्रवर्तते ॥ इति श्रीदित्रयं सारधनाम हृद्दलि
 पूजां गुरु २ स्वाहा ॥ इति महावली ॥ ॥ ऐं वं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं पटयश्च राभस भूताश्च वेतालाश्च
 त्रपालकाः ॥ जाकिनी च तथा माला पुट नाके टपूट ना ॥ पीठ जाश्च त्रजा श्रेयं गर्भजा सह जा तथा
 योगमत्र जा श्रेयं कुलजाश्च विशेषतः ॥ नागरूपधराश्चान्या मे गिन्यो बलवन्तराः ॥ नाना देशानि वा
 सिन्यः अस्मिन् न के रमागता ॥ समाया त्त कुर्ये चान्ये तथा च वलिका क्षिणाः ॥ तृप्यं तु आसवे ह

श्री वली

व. गन्धपूष्पफलप्रवेन ॥ तप्यंदंततेकासंवाधितनुसदा ममः ॥ क्रौं क्रौं हूं ३ फट् ३ स्वाहा ॥ श्रुतिमहावलि
समाप्तं ॥ ॥ ॥ काळीला माल ॥ पाभुपतास्त्र ॥ ॥ ॐ त्रैलोक्यैः क्रौंसमस्तैयभभूत स्वस्व
दिशां सुतपानय आसाहुं ३ फट् वलिं गुरु २ स्वाहा ॥ श्रुतिवली ॥ ॥ क्रौं क्रौं हूं २ सर्वभूतेश्वर
हानन्दभुतेश्वर महानादघणेश्वर विजयेश्वर महानृत्येश्वर अघोरेश्वर महामहानिेश्वर पम
भूतेश्वर भूतेश्वरः इमां पुतां गंधधूप दीपाद्यवलिं गुरु २ शान्तिं कुरु २ स्वाहा ॥ श्रुतिभूतवलि ॥
अथ महाभूतवलि ॥ ॥ ऐं पक्रौं अक्रौं आक्रौं इक्रौं शक्रौं उक्रौं ऊं क्रौं कक्रौं कृक्रौं लूक्रौं लूक्रौं ऐं
ऐं क्रौं ओक्रौं ओक्रौं अक्रौं अक्रौं कक्रौं खक्रौं गक्रौं घक्रौं उक्रौं चक्रौं छक्रौं जक्रौं झक्रौं ङक्रौं ङक्रौं
ङक्रौं ङक्रौं णक्रौं तक्रौं थक्रौं दक्रौं धक्रौं नक्रौं पक्रौं फक्रौं वक्रौं भक्रौं मक्रौं यक्रौं रक्रौं लक्रौं वक्रौं शः

श्री वली

क्रौं यक्रौं सक्रौं ह क्रौं सः क्रौं क्रौं क्रौं विघ्नाकारिणी हूं महाशान्तिं कुरुं महाभूतः शान्तिकुरु वलिं गुरु
कुरु स्वाहा ॥ ॥ श्रुतिभूतवलि ॥ अथभूतानीवलि ॥ ॥ ऐं यक्रौं क्रौं अक्रौं आक्रौं इक्रौं शक्रौं उक्रौं
ऊक्रौं कक्रौं कृक्रौं लूक्रौं लूक्रौं ऐं क्रौं ऐं क्रौं ओक्रौं ओक्रौं अक्रौं अक्रौं क्रौं क्रौं महाभूतिनी शान्तिं कुरु
वलिं गुरु २ स्वाहा ॥ श्रुतिभूतिनीवलि ॥ ॥ अथ गणेशवलि ॥ ॥ क्रौं क्रौं गां गौं गूं गें गों गः कुरु
गणेशाय स्वां स्वां स्तुतः क्रौं श्री महागणपति नाथायि महेश्वर तनयाय देव्य मूर्तय गजमुखाय विग
लवर्णाय दशभुजाय क्रौं ऐं श्रीं परचं चलाय शक्ती साहिताय महापंचाशतगणेशायै स्वपुखाद्या च
तुर्गणनाथ साहितायै सांगारये सगणा परिवाणये सिद्धि बुद्धि प्रदे सर्ववोद्य प्रशमणी सर्वदुःखप्र
मोचनि २ सर्वपापकलह नाशय पर्यंत मंत्र चूणं गुरु महा कुरु राजलक्ष्मादि सर्वगै गात्राशय २

१०

५२
२५

सुःखसौभाग्यसंपत्ति संतति आयुशो गवत ए श्रव्य दद २ धनधा न्यवीत्यादी पशुवाहन प्रधय २ ने
जश्वीकांति मनो रथा पूय २ देवायां महाविद्या प्रमदय २ नाशय २ सर्वदुःख दय २ सर्वबंधनं मो
चय २ वरय अभिचार नाशय २ सर्वशांतिं कुरु २ श्रीं श्रीं मां अलिबलि पिशितां वलिंगु २ नुरु २ मुह
वलिंगु २ गांगीं स्वाहा ॥ इति महाबाण पति शांति वलि ॥ ॥ ॐ श्रीं कुरुकुले स्वाहा भोते
चोया लुखा पुने ॥ तोदन ॥ ॐ ज्वरित कुं फट् स्वाहा ॥ ॥ अथ रुद्र शांति वलि ॥ ॥ ॐ नमो
तिदशभार महाभैरवाय नीलवर्णाय रुद्र रूपकपिलपिङ्गलजय मन्त्रहि भाक्षत व्याघ्रवर्मवति भुविता दक्षा
काल अत्युग विद्युत्मुखाय हूं कारनादेत गजित भुमिकं पाय अतिभयानकाय स्वशक्ती महिताय सांगा
य सगण परिवाराय महासप्रिय नर रुधिरपानत्रे घुनितलोचनाय सममाल प्रभंजनकार सर्वशांति

५३
२६

कुरु रुद्रं मया पूष्यधूप दीप पूजा मया यथोपनीता अलिबलि पिशितां वलिंगु २ नुरु २ मुह २ ल २ ख २
खत २ अमुक उत्य त उदेशना प्रशांत्यर्थं हूं २ फट् २ श्रीं श्रीं सर्वशांति कुरु २ भमस्वा पणधस्वाहा
इति रुद्र शांति वलि ॥ ॥ अथ विष्णु शांति वलि ॥ ॐ श्रीं नयाय हन २ शान् हन २ महासुख प्रद
मृत्यु प्रवंचय २ सर्व गर्वह पीदा दोष विनाशय २ जकडा किनी भय नाशकं सिद्धिदा धन महाका
म प्रद इमं तु भोगदं पत्रे मोक्षदं हूं श्रीं श्रीं स ॐ स्वाहा २ शांति कुरु २ स्वाहा ॥ इति वीष्णु शांति व
लि ॥ ॥ ॥ बलि जाप स्तोत्र धनका नवीन चाफाना पिशाता विमलालया द्वाय थोमा
हरिताय नमः हौषापा सुकूपका साधन ० चतुस्रस्यकारः ० श्रीं गं वलि ॥

गृहे अंगपूजाविधि

३१

३१

अनन्त नर नाथि

1.030

ASHA ARCHIVES

